17 साँस-साँस में बाँस

एक जादूगर थे चंगकीचंगलनबा। अपने जीवन में उन्होंने कई बड़े-बड़े करतब दिखलाए। जब मरने को हुए तो लोगों से बोले, "मुझे दफ़नाए जाने के छठे दिन मेरी कब्र खोदकर देखोगे तो कुछ नया-सा पाओगे।"

कहा जाता है कि मौत के छठे दिन उनकी कब्र खोदी गई और उसमें से निकले बाँस की टोकरियों के कई सारे डिज़ाइन। लोगों ने उन्हें देखा, पहले उनकी नकल की और फिर नए डिज़ाइन भी बनाए।

बाँस भारत के विभिन्न हिस्सों में बहुतायत में होता है। भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के सातों राज्यों में बाँस बहुत उगता है। इसलिए वहाँ बाँस की चीज़ें बनाने का चलन भी खूब है। सभी समुदायों के भरण-पोषण में इसका बहुत हाथ है। यहाँ हम खासतौर पर देश के उत्तरी-पूर्वी राज्य नागालैंड की बात करेंगे। नागालैंड के निवासियों में बाँस की चीज़ें बनाने का खूब प्रचलन है।

इंसान ने जब हाथ से कलात्मक चीज़ें बनानी शुरू कीं, बाँस की चीज़ें तभी से बन रही हैं। आवश्यकता के अनुसार इसमें बदलाव हुए हैं और अब भी हो रहे हैं।

© NCERT not to be republished

कहते हैं कि बाँस की बुनाई का रिश्ता उस दौर से है, जब इंसान भोजन इकट्ठा करता था। शायद भोजन इकट्ठा करने के लिए ही उसने ऐसी डलियानुमा चीज़ें बनाई होंगी। क्या पता बया जैसी किसी चिड़िया के घोंसले से टोकरी के आकार और बुनावट की तरकीब हाथ लगी हो!

बाँस से केवल टोकरियाँ ही नहीं बनतीं। बाँस की खपच्चियों से ढेर चीज़ें बनाई जाती हैं, जैसे–तरह-तरह की चटाइयाँ, टोपियाँ, टोकरियाँ, बरतन, बैलगाड़ियाँ, फ़र्नीचर, सजावटी सामान, जाल, मकान, पुल और खिलौने भी।

बाँस से मेरा रिश्ता

बाँस का यह झुरमुट मुझे अमीर बना देता है। इससे मैं अपना घर बना सकता हूँ, बाँस के बरतन और औज़ार इस्तेमाल करता हूँ, सूखे बाँस को मैं ईंधन की तरह इस्तेमाल करता हूँ, बाँस का कोयला जलाता हूँ, बाँस का अचार खाता हूँ, बाँस के पालने में मेरा बचपन गुज़रा, पत्नी भी तो मैंने बाँस की टोकरी के ज़रिए पाई और फिर अंत में बाँस पर ही लिटाकर मुझे मरघट ले जाया जाएगा।

असम में ऐसे ही एक जाल, जकाई से मछली पकड़ते हैं। छोटी मछलियों को पकड़ने के लिए इसे पानी की सतह पर रखा जाता है या फिर धीरे-धीरे चलते हुए खींचा जाता है। बाँस की खपच्चियों को इस तरह बाँधा जाता है कि वे एक शंकु का आकार ले लें। इस शंकु का ऊपरी सिरा अंडाकार होता है। निचले नुकीले सिरे पर खपच्चियाँ एक-दूसरे में गुँथी हुई होती हैं।

खपच्चियों से तरह-तरह की टोपियाँ भी बनाई जाती हैं। असम के चाय बागानों के चित्रों में तुम्हें लोग ऐसी टोपियाँ पहने दिख जाएँगे और हाँ उनकी पीठ पर टँगी बाँस की बड़ी-सी टोकरी देखना न भूलना।

© NCERT not to be republished
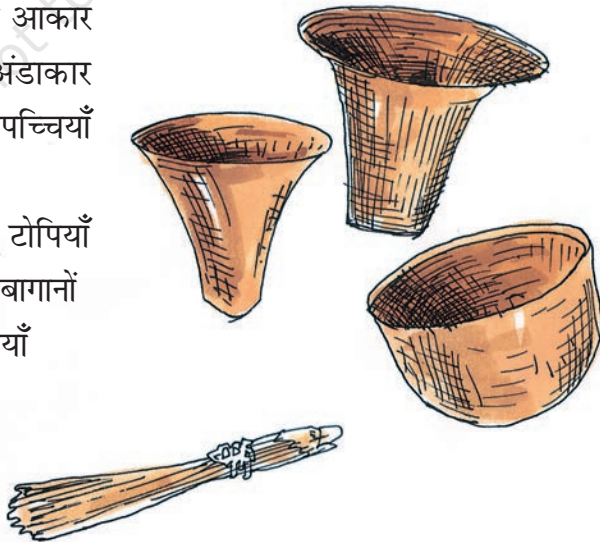
जुलाई से अक्टूबर, घनघोर बारिश के महीने! यानी लोगों के पास बहुत सारा खाली वक्त या कहो आसपास के जंगलों से बाँस इकट्ठा करने का सही वक्त। आमतौर पर वे एक से तीन साल की उम्र वाले बाँस काटते हैं। बूढ़े बाँस सख्त होते हैं और टूट भी तो जाते हैं। बाँस से शाखाएँ और पत्तियाँ अलग कर दी जाती हैं। इसके बाद ऐसे बाँसों को चुना जाता है जिनमें गाँठें दूर-दूर होती हैं। दाओ यानी चौड़े, चाँद जैसी फाल वाले चाकू से इन्हें छीलकर खपच्चियाँ तैयार की जाती हैं। खपच्चियों की लंबाई पहले से ही तय कर ली जाती है। मसलन, आसन जैसी छोटी चीज़ें बनाने के लिए बाँस को हरेक गठान से काटा जाता है। लेकिन टोकरी बनाने के लिए हो सकता है कि दो या तीन या चार गठानों वाली लंबी खपच्चियाँ काटी जाएँ। यानी कहाँ से काटा जाएगा यह टोकरी की लंबाई पर निर्भर करता है।
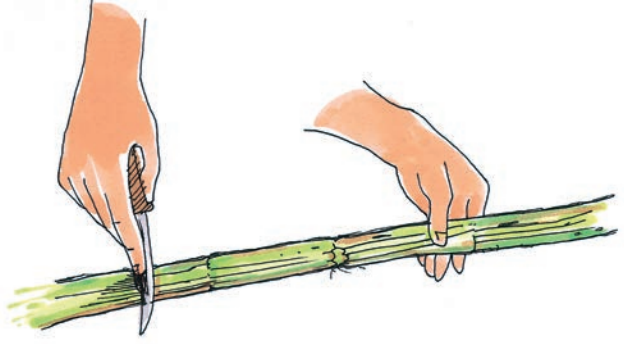
आमतौर पर खपच्चियों की चौड़ाई एक इंच से ज़्यादा नहीं होती है। चौड़ी खपच्चियाँ किसी काम की नहीं होतीं। इन्हें चीरकर पतली खपच्चियाँ बनाई जाती हैं। पतली खपच्चियाँ लचीली होती हैं। खपच्चियाँ चीरना उस्तादी का काम है। हाथों की कलाकारी के बिना खपच्चियों की मोटाई बराबर बनाए रखना आसान नहीं। इस हुनर को पाने में काफ़ी समय लगता है।

टोकरी बनाने से पहले खपच्चियों को चिकना बनाना बहुत ज़रूरी है। यहाँ फिर दाओ काम आता है। खपच्ची बाएँ हाथ में होती है और दाओ दाएँ हाथ में। दाओ का धारदार सिरा खपच्ची को दबाए

© NCERT not to be republished

रहता है जबकि तर्जनी दाओ के एकदम नीचे होती है। इस स्थिति में बाएँ हाथ से खपच्ची को बाहर की ओर खींचा जाता है। इस दौरान दायाँ अँगूठा दाओ को अंदर की ओर दबाता है और दाओ खपच्ची पर दबाव बनाते हुए घिसाई करता है। जब तक खपच्ची एकदम चिकनी नहीं हो जाती, यह प्रक्रिया दोहराई जाती है। इसके बाद होती है खपच्चियों की रंगाई। इसके लिए ज़्यादातर गुड़हल, इमली की पत्तियों आदि का उपयोग किया जाता है। काले रंग के लिए उन्हें आम की छाल में लपेटकर कुछ दिनों के लिए मिट्टी में दबाकर रखा जाता है।

बाँस की बुनाई वैसे ही होती है जैसे कोई और बुनाई। पहले खपच्चियों को चित्र में दिखाए गए तरीके से आड़ा-तिरछा रखा जाता है। फिर बाने को बारी-बारी से ताने के ऊपर-नीचे किया जाता है। इससे चैक का डिज़ाइन बनता है। पलंग की निवाड़ की बुनाई की तरह।

टुइल बुनना हो तो हरेक बाना दो या तीन तानों के ऊपर और नीचे से जाता है। इससे कई सारे डिज़ाइन बनाए जा सकते हैं।

टोकरी के सिरे पर खपच्चियों को या तो चोटी की तरह गूँथ लिया जाता है या फिर कटे सिरों को नीचे की ओर मोड़कर फँसा दिया जाता है और हमारी टोकरी तैयार! चाहो तो बेचो या घर पर ही काम में ले लो।

❑ एलेक्स एम. जॉर्ज
(अनुवाद–शशि सबलोक)

© NCERT not to be republished

अभ्यास-प्रश्न

निबंध से

1. बाँस को बूढ़ा कब कहा जा सकता है? बूढ़े बाँस में कौन सी विशेषता होती है जो युवा बाँस में नहीं पाई जाती?
2. बाँस से बनाई जाने वाली चीज़ों में सबसे आश्चर्यजनक चीज़ तुम्हें कौन सी लगी और क्यों?
3. बाँस की बुनाई मानव के इतिहास में कब आरंभ हुई होगी?
4. बाँस के विभिन्न उपयोगों से संबंधित जानकारी देश के किस भू-भाग के संदर्भ में दी गई है? एटलस में देखो।

निबंध से आगे

1. बाँस के कई उपयोग इस पाठ में बताए गए हैं। लेकिन बाँस के उपयोग का दायरा बहुत बड़ा है। नीचे दिए गए शब्दों की मदद से तुम इस दायरे को पहचान सकते हो–
   - संगीत
   - मच्छर
   - फर्नीचर
   - प्रकाशन
   - एक नया संदर्भ

© NCERT not to be republished

2. इस लेख में दैनिक उपयोग की चीज़ें बनाने के लिए बाँस का उल्लेख प्राकृतिक संसाधन के रूप में हुआ है। नीचे दिए गए प्राकृतिक संसाधनों से दैनिक उपयोग की कौन-कौन सी चीज़ें बनाई जाती हैं –

प्राकृतिक संसाधन	**दैनिक उपयोग की वस्तुएँ**
● चमड़ा	....
● घास के तिनके	....
● पेड़ की छाल	....
● गोबर	....
● मिट्टी	....

इनमें से किन्हीं एक या दो प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल करते हुए कोई एक चीज़ बनाने का तरीका अपने शब्दों में लिखो।

3. जिन जगहों की साँस में बाँस बसा है, अखबार और टेलीविजन के ज़रिए उन जगहों की कैसी तसवीर तुम्हारे मन में बनती है?

अनुमान और कल्पना

- इस पाठ में कई हिस्से हैं जहाँ किसी काम को करने का तरीका समझाया गया है? जैसे–

  छोटी मछलियों को पकड़ने के लिए इसे पानी की सतह पर रखा जाता है या फिर धीरे-धीरे चलते हुए खींचा जाता है। बाँस की खपच्चियों को इस तरह बाँधा जाता है कि वे एक शंकु का आकार ले लें। इस शंकु का ऊपरी सिरा अंडाकार होता है। निचले नुकीले सिरे पर खपच्चियाँ एक-दूसरे में गुँथी हुई होती हैं।

  - इस वर्णन को ध्यान से पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर अनुमान लगाकर दो। यदि अंदाज़ लगाने में दिक्कत हो तो आपस में बातचीत करके सोचो–

  (क) बाँस से बनाए गए शंकु के आकार का जाल छोटी मछलियों को पकड़ने के लिए ही क्यों इस्तेमाल किया जाता है?

  (ख) शंकु का ऊपरी हिस्सा अंडाकार होता है तो नीचे का हिस्सा कैसा दिखाई देता है?

  (ग) इस जाल से मछली पकड़ने वालों को धीरे-धीरे क्यों चलना पड़ता है?

© NCERT not to be republished

शब्दों पर गौर

हाथों की कलाकारी	घनघोर बारिश	बुनाई का सफ़र
आड़ा-तिरछा	डलियानुमा	कहे मुताबिक

- इन वाक्यांशों का वाक्यों में प्रयोग करो।

व्याकरण

1. 'बुनावट' शब्द 'बुन' क्रिया में 'आवट' प्रत्यय जोड़ने से बनता है। इसी प्रकार नुकीला, दबाव, घिसाई भी मूल शब्द में विभिन्न प्रत्यय जोड़ने से बने हैं। इन चारों शब्दों में प्रत्ययों को पहचानो और उन से तीन-तीन शब्द और बनाओ। इन शब्दों का वाक्यों में भी प्रयोग करो–

बुनावट	नुकीला	दबाव	घिसाई

2. नीचे पाठ से कुछ वाक्य दिए गए हैं–
   (क) वहाँ बाँस की चीज़ें बनाने का चलन भी खूब है।
   (ख) हम यहाँ बाँस की एक-दो चीज़ों का ही ज़िक्र कर पाए हैं।
   (ग) मसलन आसन जैसी छोटी चीज़ें बनाने के लिए बाँस को हरेक गठान से काटा जाता है।
   (घ) खपच्चियों से तरह-तरह की टोपियाँ भी बनाई जाती हैं।

   रेखांकित शब्दों को ध्यान में रखते हुए इन बातों को अलग ढंग से लिखो।

3. तर्जनी हाथ की किस उँगली को कहते हैं? बाकी उँगलियों को क्या कहते हैं? सभी उँगलियों के नाम अपनी भाषा में पता करो और कक्षा में अपने साथियों और शिक्षक को बताओ।

4. अंगुष्ठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठा–ये पाँच उँगलियों के नाम हैं। इन्हें पहचान कर सही क्रम में लिखो।

© NCERT not to be republished

पेपरमेशी

कागज़ से तरह-तरह की आकृतियाँ, खिलौने, सजावट के लिए झालर, झंडियाँ आदि तो तुमने खूब बनाई होंगी, पर कभी मूर्ति बनाई है कागज़ से? हाँ भई, कागज़ से भी मूर्ति बनाई जा सकती है। इस कला को अंग्रेज़ी में पेपरमेशी कहा जाता है।

कागज़ से मूर्ति बनाने की चार विधियाँ हैं। इन विधियों के बारे में कुछ मूल बातें यहाँ दे रहे हैं।

कागज़ को भिगोकर

सबसे पहले यह तय करो कि तुम क्या बनाना चाहते हो क्योंकि जो भी बनाना चाहोगे उसके साँचे की ज़रूरत पड़ेगी।

पुराने अखबार या रद्दी कापी-किताबों को टुकड़े-टुकड़े करके पानी में भिगो दो। कागज़ को डेढ़-दो घंटे भीगने दो। जब कागज़ अच्छी तरह भीग जाए तो एक-एक टुकड़ा लेकर साँचे पर चिपकाते जाओ। जब पूरे साँचे पर एक तह जम जाए तो उसके ऊपर पाँच-छह तह गोंद की मदद से चिपकाकर बनाओ। अब इसे सूखने के लिए रख दो। सूख जाने पर सावधानी से धीरे-धीरे साँचे पर कागज़ से बनी रचना को अलग करो।

© NCERT not to be republished

तुम्हारी मूर्ति तैयार है। यह वज़न में हलकी भी होगी और गिरने पर टूटने का डर भी नहीं रहेगा। इसे तुम मन चाहे रंगों से रंग भी सकते हो।

इस विधि से तुम मुखौटे भी बना सकते हो। और हाँ, मुखौटे के लिए तो साँचे की भी आवश्यकता नहीं। बस किसी

चेहरे के आकार का बरतन का गोल पेंदा उपयोग कर सकते हो। तसला या बड़ा कटोरा (या अन्य कोई बरतन) चाहिए। इस पर ऊपर बताए तरीके से ही गीले कागज़ की पाँच-छह तह चिपकाओ और सूखने के लिए छोड़ दो। जब अच्छी तरह सूख जाए तो इसे मुँह पर लगाकर अनुमान से आँख और नाक के निशान बना लो। आँखों की जगह दो छेद बनाओ। नाक की जगह पर भी छेद बना सकते हो, ताकि तुम्हारी नाक बाहर निकल आए। चाहो तो मुखौटे में कागज़ की नाक भी बना सकते हो। जब कागज़ की तीन-चार तह बन जाए तो एक सूखे कागज़ को हाथ से दबाकर, मुट्ठी में भींचकर गोला-सा बना लो। इस गोले को दबाकर ऊपर से संकरा और नीचे से थोड़ा चौड़ा नाक जैसा आकार दे दो। अब इसे गोंद लगाकर मुखौटे पर नाक की जगह चिपका दो।

मुखौटे पर रंग करके उसे सुंदर बना सकते हो। रंग की मदद से ही आँख की भौंहें, मुँह, मूँछ आदि भी बना लो। भुट्टे के बाल, जूट आदि

© NCERT not to be republished

लगाकर भी दाढ़ी, मूँछ या भौंहें बनाई जा सकती हैं!

कागज़ की लुगदी बनाकर

कागज़ के छोटे-छोटे टुकड़े किसी पुराने मटके या अन्य बरतन में पानी भरकर भिगो दो। इन्हें दो-तीन दिन तक गलने दो। जब कागज़ अच्छी तरह गल जाए तो उसे पत्थर पर कूटकर एक-सा बना लो। अब इस पर गोंद या पिसी हुई मेथी का गाढ़ा घोल डालकर अच्छी तरह मिला लो। इस तरह कागज़ की लुगदी तैयार हो जाएगी। इस लुगदी से मनचाही मूर्ति बना सकते हो। गाँवों में इस विधि से डलिया आदि बनाई जाती हैं। शायद तुमने भी बनाई हो। पर इस तरह की लुगदी से सुघढ़ तथा जटिल डिज़ाइन वाली मूर्तियाँ या वस्तुएँ नहीं बनाई जा सकतीं।

लुगदी में खड़िया (चॉक पाउडर) मिलाकर

अगर खड़िया मिलाकर बनाना है तो एक किलो कागज़ की लुगदी में एक पाव गोंद, पाँच किलो खड़िया चाहिए। कागज़ को पानी में भिगोकर लुगदी बना लो। अगर पानी ज़्यादा लगे तो हाथ से दबाकर निकाल

मिट्टी की मूर्तिकला के समान कागज़ की कला 'पेपरमेशी' पुरानी नहीं है।

अट्ठारहवीं शताब्दी में इस माध्यम में यूरोप में बहुत काम हुआ। सुंदर डिज़ाइनों वाले डिब्बे, छोटी-छोटी सजावट की चीज़ें आदि बनाई गईं। दरवाज़ों और चौखटों पर सुंदर बेलबूटे भी इससे बनाए जाते थे।

सन् 1850 के आसपास बड़े-बड़े भवनों के अंदर की सजावट के लिए भी पेपरमेशी का खूब उपयोग हुआ। इससे मुखौटे, गुड़ियों के चेहरे, चित्र के चारों तरफ़ लगने वाले नक्काशीदार फ्रेम, ब्लॉक आदि भी बनाए जाते थे।

अपने यहाँ भी पेपरमेशी में मूर्तियाँ, डिब्बे इत्यादि खूब बनाए जाते हैं। बिहार में मानव आकार जितनी बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ भी बनाई जाती हैं और उन्हें वहाँ की प्रसिद्ध चित्र शैली मधुबनी के समान रंगा भी जाता है। बिहार में इस तरह की मूर्तियाँ बनाने वालों में सुभद्रादेवी का नाम प्रसिद्ध है। कश्मीर में पेपरमेशी से डिब्बे बनाने का काम बहुत सुंदर होता है। उनके ऊपर बेलबूटों के सुंदर डिज़ाइन भी बनाए जाते हैं।

अलग-अलग प्रदेशों में लोकनृत्यों और लोककलाओं में कागज़ के बने मुखौटों का खूब उपयोग किया जाता है।

© NCERT not to be republished

दो। अब इसमें खड़िया मिलाते हुए आटे जैसा गूँधते जाओ। बीच में गोंद भी मिला लो। जब तीनों चीज़ें अच्छी तरह मिल जाएँ तो मूर्ति के लिए लुगदी तैयार है।

अब इससे तुम जैसी चाहो, वैसी मूर्ति बना सकते हो। साँचे से भी और बिना साँचे के भी। बनने वाली मूर्तियाँ खड़िया के कारण सफ़ेद होंगी। रंग करके मूर्ति को सुंदर बना सकते हो। बाज़ार में बिकने वाले बहुत-से खिलौने इसी विधि से बनते हैं।

लुगदी में मिट्टी मिलाकर

इस विधि में एक किलो कागज़ के लिए एक पाव गोंद तथा दस किलो मिट्टी की आवश्यकता होगी। कागज़ गल जाने पर लुगदी तैयार करते समय उसमें साफ़ छनी महीन मिट्टी मिलाते जाओ और आटे जैसा गूँधकर एक-सा करते जाओ। गोंद भी इसी बीच मिला दो।

लुगदी देखने में मिट्टी की तरह दिखेगी, पर हलकी होगी। इससे तुम साँचे या बिना साँचे के उपयोग के मूर्तियाँ बना सकते हो।

साँचे से बनाने के लिए अंदाज़ से आवश्यक लुगदी लो। उसकी गोल लोई बना लो। अब फ़र्श पर थोड़ी सूखी मिट्टी परथन की तरह फैला दो। इस पर लोई को रखकर हाथ या बेलन से साँचे के आकार में बड़ा करते जाओ। पर उसकी मोटाई बाजरे या ज्वार की रोटी जितनी अवश्य होनी चाहिए।

बेलन हलके हाथ से चलाना। जब लोई साँचे के आकार की हो जाए तो इसे उठाकर साँचे पर रख दो और हाथ से धीरे-धीरे दबाओ, ताकि उसमें साँचे का आकार अच्छे से आ जाए। जब यह थोड़ा कड़क हो जाए तो साँचे को उलटा करके हलके हाथ से थोड़ा-सा ठोको और साँचे को उठा लो। तुम्हारी मूर्ति तैयार है। इसे पकाया तो नहीं जा सकता, पर हाँ, टूटने पर गोंद या फ़ेविकोल से जोड़ ज़रूर सकते हैं और रंग तो कर ही सकते हैं।

❑ *जया विवेक*

© NCERT not to be republished

शब्दकोश

यहाँ तुम्हारे लिए एक छोटा-सा शब्दकोश दिया गया है। इस शब्दकोश में वे शब्द हैं जो विभिन्न पाठों में आए हैं और तुम्हारे लिए नए हो सकते हैं। किसी-किसी शब्द के कई अर्थ भी हो सकते हैं। पाठ के संदर्भ से जोड़कर तुम यह अनुमान खुद लगाओ कि कौन सा अर्थ ठीक है।

तुम देखोगे कि शब्द के अर्थ से पहले विभिन्न प्रकार के अक्षर-संकेत दिए गए हैं। इन संकेतों से हमें शब्दों की व्याकरण संबंधी जानकारी मिलती है। नीचे दी गई सूची की मदद से तुम इन अक्षर-संकेतों को समझ सकते हो–

अ. – अव्यय
क्रि. – क्रिया
पु. – पुल्लिंग
वि. – विशेषण
सं. – संज्ञा
अ.क्रि. – अकर्मक क्रिया
क्रि.वि. – क्रिया विशेषण
मु. – मुहावरा
स्त्री. – स्त्रीलिंग
स.क्रि. – सकर्मक क्रिया

© NCERT not to be republished

अ

अंट-शंट [वि.पु.]–फ़ालतू या बेकार (की चीज़)

अंचल [पु.]–साड़ी, ओढ़नी आदि जैसे कपड़ों का किनारे का हिस्सा, आँचल

अडिग [वि.]–स्थिर, न डोलने वाला

अनादिकाल [वि.]–जो सदा से चला आ रहा हो

अनुकरण [सं.पु.]–नकल, किसी की देखा-देखी करना

अबूझ [वि.]–जिसे बूझा या समझा न जा सके, अनबूझ

अभिराम [वि.]–सुंदर, मोहक

अवलोकन [सं.पु.]–बारीकी से देखना, जाँचना-परखना

आ

आगंतुक [वि.]–आनेवाला

ऑलिव ऑयल [सं.]–जैतून का तेल

आस्तीन [स्त्री.]–कुर्ते, कमीज़ जैसे सिले हुए कपड़े की बाँह

आह्लादकर [पु.]–खुशी देनेवाला

आह्वान [पु.]–बुलावा, आमंत्रण, पुकार

उ

उकेरना [स.क्रि.]–खोदकर उठाना
उद्दाम [वि.]–बंधन रहित, बहुत ज़्यादा
उष्णता [सं.]–गरमी

ओ

ओजस्वी [वि.]–ओजभरा, प्रभावपूर्ण, शक्तिशाली

क

कंटक [पु.]–काँटा
कतरा [पु.]–बूँद
कनी [स्त्री.]–बूँदें, कण
कमतर [वि.]–कम महत्त्वपूर्ण, कम करके आँकना
करताल [पु.]–एक प्रकार का वाद्य-यंत्र
कल [स्त्री.]–चैन
काढ़ना [स.क्रि.]–निकालना
काम आना [मु.]–युद्ध में मारा जाना, शहीद होना
कारकुन [वि.]–कारिंदा, काम करने वाला
कालगति [स्त्री.]–मृत्यु
कार्निस [सं.] दीवार की कँगनी
कित [अ.]–कहाँ
कृत्रिम [वि.]–बनावटी
केतिक [वि.]–कितना
कैस्टर ऑयल [सं.]–अरंडी का तेल
कोरस [वि.[–एक साथ मिलकर गाना
कौपीनधारी [पु.]–धोती पहनने के एक विशेष ढंग के कारण यह विशेषण गांधी जी के लिए प्रयोग में लाया जाता था, लँगोटी धारण करनेवाला

ख

खपच्ची [स्त्री.]– बाँस की तीली
खलना [अ.क्रि.]–अखरना
खाक [स्त्री.]–धूल, मिट्टी, राख
खाखरा [पु.]–एक गुजराती व्यंजन
खाट [पु.]–चारपाई
खिचड़ी [स्त्री.]–मिला-जुला
खीझना [अ.क्रि.]–झुँझलाना, क्रुद्ध होना

ग

गरबीली [वि.]–गर्व करने वाली
गरारा [पु.अ.]–ढीली मोहरी का पाजामा
गलतफ़हमी [स्त्री.]–गलत समझना
गलीचा [पु.]–सूत या ऊन के धागे से बुना हुआ कालीन
गात [पु.]–शरीर
गाथा [स्त्री.]–कहानी
गिर्द [अ.]–आसपास
गुलज़ार [वि.]–खिले हुए फूलों से भरा हुआ, फुलवारी
गोकि [वि.]–हालाँकि, यद्यपि
गोट [स्त्री.]–सुंदरता के लिए कपड़े पर लगाई जाने वाली पट्टी, फुलकारी, मगज़ी

घ

घरीक [अ.]–घड़ीभर, क्षणभर
घात [वि.]–छल, चाल

च

चंद [वि.]–कुछ
चटक [पु.]–रंग की शोखी / भड़कीला / चटकीला

© NCERT not to be republished

च्वै–आँसू बह चले

चबेना [पु.]–चबाकर खाने वाली खाद्य सामग्री

चाँदनी [स्त्री.]–चंदोवा, ऊपर से ताना गया कपड़ा

चारु [वि.]–सुंदर

चिथड़े [पु.]–फटा-पुराना कपड़ा, गूदड़

चुनिंदा [वि.]–चुना हुआ

चुन्नट [स्त्री.]–सिलवट

छ

छबीली [वि.]–सुंदर

छरहरा [वि.]–चुस्त, फुर्तीला

ज

जमघट [पु.]–एक जगह इकट्ठे लोगों की भीड़, जमाव

ज़र्रा [पु.अ.]–कण

जानि [स्त्री.सं.]–जानकर

जुंडी [स्त्री.सं.]–जौ और बाजरे की बालियाँ

झ

झलकीं [स्त्री.]–दिखाई दीं

झाँझ [स्त्री.]–काँसे की दो तश्तरियों से बना हुआ वाद्य-यंत्र

ट

टरकाना [स.क्रि.]–खिसका देना, टाल देना

टीपना [स.क्रि.]–हू-ब-हू उतारना, नकल करके लिखना

ठ

ठाढ़े [वि.]–खड़े

ड

डग [पु.]–कदम

त

तश्तरी [स्त्री.]–थालीनुमा प्लेट

तिय [स्त्री.]–पत्नी

तिहाकर [स.क्रि.]–तह लगाकर

द

दए [क्रि.]–रखना, धरना

दरख्वास्त [सं.स्त्री]–निवेदन, अर्ज़ी

दरिया [सं.पु.]–नदी

दामन [सं.पु.]–पहाड़ के नीचे की ज़मीन

दिव्य [वि.]–बढ़िया, भव्य

द्य

द्योतक [वि.]–सूचक

द्व

द्वंद्व [सं.पु.]–संघर्ष

द्वै [वि.]–दो

ध

धरि – रखकर

धीर [वि.]–धैर्य, धीरज

न

नाह [पु.]– पति, स्वामी

निकसी [स्त्री.क्रि.]–निकली

निपात [वि.]–गिरना, पतन

नियामत [स्त्री.]–ईश्वर की देन

© NCERT not to be republished

निष्फल [वि.]–जिसका कोई फल न हो।

निस्पृह [वि.]–इच्छा रहित

प

पंखा [पु.]–हाथ से झलनेवाला पंखा, बेना

पखारैं [स.क्रि.]–धोना

पगडंडी [स्त्री.]–खेत या मैदान में पैदल चलनेवालों के लिए बना पतला रास्ता

पर्नकुटी [स्त्री.]–पत्तों की बनी छाजन वाली कुटिया

परिखौ [स.क्रि.]–प्रतीक्षा करना, परखना

पसेउ [पु.]–पसीना

पुट [पु.]–होंठ

पुर [वि.]–नगर, किला

पेचीदा [वि.]–उलझनवाला, कठिन, टेढ़ा

प्रकोप [पु.]–बीमारी का बढ़ना, बहुत अधिक या बढ़ा हुआ कोप

प्रतिदान [पु.]–किसी ली हुई वस्तु के बदले दूसरी वस्तु देना

प्रागैतिहासिक मानव [वि.]–इतिहास में वर्णित काल के पूर्व का मानव

पोंछि–पोंछकर

फ

फ़िरंगी [पु.]–विदेशी, अंग्रेज़ (भारत में यह शब्द अंग्रेज़ों के लिए प्रयुक्त)

फ़िरोज़ी [स्त्री]–फ़ीरोज़े के रंग का

फ़ौलादी [वि.]–फ़ौलाद (लोहे) से बना बहुत कड़ा या मज़बूत

फ्रिल [सं.]–झालर

ब

बघारना [स.क्रि.]–पांडित्य दिखाने के लिए किसी विषय की चर्चा करना

बदहज़मी [स्त्री.]–अपच, अजीर्ण

बिलोचन [पु.]–नेत्र

बुंदेले हरबोलों [पु.]–बुंदेलखंड की एक जाति विशेष, जो राजा-महाराजाओं के यश गाती थी

बुरकना [स.क्रि.]–चूरे जैसी किसी चीज़ को छिड़कना

बुहारी [स.क्रि.]–बुहारनेवाली चीज़, झाड़ू

बूझति [स्त्री. सं.क्रि.]–पूछती है

बेज़ार [वि.]–परेशान

बैरिस्टरी [स्त्री.]–वकालत

भ

भूभुरि [स्त्री.]–गरम रेत, गरम धूल

भृकुटी [स्त्री.]–भौंहें

भेड़ लेना [स.क्रि.]–भिड़ा देना, सटा देना, बंद करना

म

मंशा [पु.]– इरादा

मग [सं.पु.]–रास्ता

मनुज [पु.]–मनुष्य

मरज (मर्ज़) [पु.]–बीमारी

मुदित [वि.]–मोदयुक्त, आनंदित

मुमकिन [वि.अ.]–संभव

© NCERT not to be republished

य

यान [पु.]–वाहन

ल

लरिका [पु.]–लड़का
लैम्प [पु.]–चिराग
लोच [स्त्री.]–लचीलापन, लचक

व

वात [पु.]–शरीर में रहने वाली वायु के बढ़ने से होनेवाला रोग
वारि [पु.]–जल
विकट [वि.]–भयंकर, दुर्गम, कठिन
विजन [वि.]–निर्जन या एकांत जगह
विरुदावली [वि.]–विस्तृत कीर्ति–गाथा, बड़ाई
व्यूह रचना [स्त्री.]–समूह, युद्ध में सुदृढ़ रक्षा–पंक्ति बनाने के उद्देश्य से सैनिकों का किसी विशेष क्रम में खड़ा होना

श

शख्सियत [स्त्री.]–व्यक्तित्व
शिफ़्ट [स.क्रि.]–पारी
शिविर [पु.]–रहने या आराम करने के लिए तंबू गाड़कर अस्थायी रूप से बनाई गई जगह

स

समाँ [पु.]–वातावरण, माहौल, समय
सहल [वि.]–आसान
सॉक्स [सं.]–मोज़ा, जुराब
साँकल [स्त्री.]–दरवाज़ा बंद करने के लिए लगाई जाने वाली लोहे की कड़ी
सिम्त [स्त्री.]–दिशा
सिरजती [स्त्री.]–बनाती, सृजन करती
सिलसिला [वि.]–क्रम
सीरत [स्त्री.]–गुण
सीस [पु.]–शीश, सिर
सुभट [पु.]–रणकुशल, योद्धा
स्टॉक [सं.]–संग्रह, भंडार
स्टॉकिंग [स्त्री.]–लंबी जुराब

ह

हाज़मा [वि.]–पाचन–शक्ति
हिकमत [वि.स्त्री.]–युक्ति, उपाय
हिफ़ाज़त [वि.स्त्री.]–रक्षा
हेकड़ी [वि.स्त्री.]–घमंड
हेय [वि.]–हीन, तुच्छ

© NCERT not to be republished

मत बाँटो इंसान को

मंदिर–मस्जिद–गिरजाघर ने
बाँट लिया भगवान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा–
मत बाँटो इंसान को।।

अभी राह तो शुरू हुई है–
मंज़िल बैठी दूर है।
उजियाला महलों में बंदी–
हर दीपक मजबूर है।।

मिला न सूरज का संदेसा–
हर घाटी–मैदान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा–
मत बाँटो इंसान को ।।

अब भी हरी भरी धरती है–
ऊपर नील वितान है।
पर न प्यार हो तो जग सूना–
जलता रेगिस्तान है।।

अभी प्यार का जल देना है–
हर प्यासी चट्टान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा–
मत बाँटो इंसान को।।

साथ उठें सब तो पहरा हो–
सूरज का हर द्वार पर।
हर उदास आँगन का हक हो–
खिलती हुई बहार पर।।

रौंद न पाएगा फिर कोई–
मौसम की मुसकान को।
धरती बाँटी सागर बाँटा–
मत बाँटो इंसान को।।

❑ *विनय महाजन*

© NCERT not to be republished